शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2022
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

होली और अध्यात्म

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

होली का त्योहार प्रेम और सद्भावना का त्योहार है। इसमें अध्यात्म का अनूठा रूप झलकता है। हिंदू धर्म के नरसिंह अवतार से जुड़ा यह पर्व भक्त प्रहलाद की भक्ति का स्मरण कराता है। वह अपने देश का पहला बाल सत्याग्रही है, जिसने अपने पिता हिरण्यकशिपु को ईश्वर मानने से इनकार किया। अपने साथ में बाल-गोपाल की टोलियों को लेकर उनका नेतृत्व किया। एक पुत्र ने अपने ही पिता के अत्याचारों को किस प्रकार हंसते हुए सहन किया, वह अपने आप में अनूठा उदाहरण है। भक्त प्रहलाद आधुनिक जमाने का प्रतिनिधि है। उसे अकेले मुक्त होने की इच्छा नहीं थी। वह तो अपने साथियों को भी अपने साथ मुक्त कराना चाहता था। भक्त प्रहलाद सामूहिक मुक्ति का अनन्य उपासक था। भक्त प्रहलाद की भक्ति का रंग जिसे चढ़ जाता है, वह समाज में विषमता को स्वीकार नहीं कर पाता। ईश्वर ने हिरण्यकशिपु को अमरतत्व और उसकी बहन को अग्नि में कभी न जलने का वरदान दिया। यह सिद्धियां बिना चित्त शुद्धि के प्राप्त की गई थीं, इसलिए उनके अत्याचारों से जनता त्राहि-त्राहि करने लगी। अहंकार के वशीभूत हो स्वयं को ईश्वर स्वीकार करने की ललक ने ईश्वर को अवतार लेने पर विवश किया। 'जो बांधे सोई छोड़े' की उक्ति को चरितार्थ करने के लिए ईश्वर सगुण साकार रूप में अवतरित होता है। हिरण्यकशिपु के साथ प्रजा को मुक्ति और भक्त प्रहलाद के विश्वास को कायम रखने के लिए ईश्वर ने नरसिंह अवतार धारण किया। यह तथ्य सिद्ध है कि यदि ईश्वर ने असत्य को भी अमरत्व का वरदान दिया हो, तो वह न सिर्फ पराजित होता है, बल्कि होलिका के समान अग्नि में समाहित हो जाता है।

होली का त्योहार बहुत कुछ कहता है। मित्रता बढ़ाने और शत्रुता मिटाने का इससे सुंदर कोई त्योहार नहीं है। रंगों में छिपी भावनाएं लोगों को एक-दूसरे के करीब लाती हैं। रंगों में छिप जाते हैं अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, जात-पांत और वे सारे भेद जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करते हैं। शुद्ध प्रेम की पराकाष्ठा का त्योहार है होली, राधा-कृष्ण के रंग में डूब जाने का नाम है होली, विविधता में एकता का शंखनाद है होली, चिरंतन सत्य के स्मरण का दिवस है होली, निर्जीव स्तंभ में ईश्वर के वास का जयघोष है होली। इसलिए कहते हैं:

रंग है, उमंग है, तरंग है चारों ओर
अनूठी आभा से चमक रही है
वह देखो आती हुई भोर।
उठने दो प्रेम का ज्वार
अपने हृदय-समुद्र में
सभी को एक बार पुनः होली की शुभकामनाएं।